International Journal of Advanced Educational Research
www.educationjournal.org
ISSN: 2455-6157
Received: 29-12-2020; Accepted: 14-01-2021; Published: 30-01-2021
Volume 6, Issue 1, 2021, Page No. 52-55

अंग्रेजी की तरह ही होना चाहिए हिन्दी का भी एक मानक की-बोर्ड

रफी मोहम्मद शेख

सहायक प्राध्यापक- कम्प्यूटर, पमब गुजराती वाणिज्य महाविद्यालय, इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

तकनीक के इस युग में अंग्रेजी के साथ ही हिन्दी कम्प्यूटिंग भी तेजी से लोकप्रिय हो रही है। टायपिंग के लिए की-बोर्ड की इस्तेमाल होता है, जो हमें सामान्यतः अंग्रेजी में ही नजर आता है। अंग्रेजी केटायपिंग की-बोर्ड का फॉरमेट एक समान (क्वार्टी) के रूप में है। यह स्टैंडर्ड है लेकिन हिन्दी के लिए ऐसा कोई स्टेण्डर्डाजाइजेशन अब तक नहीं हो पाया है। इसके पीछे समस्या हिन्दी में टायपिंग लिए अलग-अलग की-बोर्ड का इस्तेमाल है। आश्चर्य की बात है कि हिन्दी टायपिंग के लिए 100 से ज्यादा की-बोर्ड का इस्तेमाल किया जाता है। हालांकि फोनेटिक, रेमिंग्टन से लेकर इनस्क्रिप्ट तक के की-बोर्ड ही सबसे ज्यादा प्रचलन में है। अलग-अलग की-बोर्ड के कारण हिन्दी में एक की-बोर्ड का स्टैण्डर्ड ही नहीं बन पाया। अलग-अलग लोग अपने-अपने हिसाब से अलग-अलग की-बोर्ड का इस्तेमाल करते हैं, जिससे उन्हें एक से दूसरे क्षेत्र और दूसरे के सिस्टम काम करने में काफी परेशानी आती है। अब जरूरत इसके लिए एक मानक की-बोर्ड तैयार करने की है, ताकि हिन्दी टायपिंग और कम्प्यूटिंग को वह गति प्रदान की जा सके, जिसकी उसे काफी समय से जरूरत है।

मूल शब्द: हिन्दी कम्प्यूटिंग, की-बोर्ड, फोनेटिक, रेमिंग्टन

प्रस्तावना

हिन्दी में कई प्रकार के की-बोर्ड प्रचलित हैं, जिनमें सबसे ज्यादा काम रेमिंग्टन, फोनेटिक और इनस्क्रिप्ट पर किया जाता है। हालांकि यूनिकोड ने फोंट की समस्या को तो हल कर दिया है, लेकिन लिखने के लिए प्रयुक्त की-बोर्ड में अभी भी कोई सर्वस्वीकृत मानक नहीं है। सी-डैक के इनस्क्रिप्ट की-बोर्ड को सरकार ने मानक की-बोर्ड के रूप में माना, लेकिन इसमें भी हिन्दी के कई चिह्नों की कमी है। अंग्रेजी में केवल एक ही तरह का क्वार्टी की-बोर्ड होता है, उसी प्रकार सबसे पहले अब जरूरत है कि एक मानक की-बोर्ड हो, ताकि सभी के लिए आसानी हो।

विषय विश्लेषण

आज के तकनीकी युग में हम अब टेक्निकली स्मार्ट बन गए हैं या कुछ इस रास्ते पर चल रहे हैं, और इन सबमें हमारी नई पीढ़ी हमसे तेज दौड़ रही है।इस तकनीक को भाषा के साथ जोड़कर देखे तो मालूम होता है कि आजकल सभी कम्प्यूटर टाइपिंग आसानी से कर लेते हैं, जैसे ई-मेल भेजना, खोलना आदि। पहले कम्प्यूटर पर अपना नाम टाइप करने के लिए केवल अंग्रेजी की ही सुविधा थी। यह मानकर हमने कम्प्यूटर और मोबाइल पर अंग्रेजी की-बोर्ड को देखकर अंग्रेजी में काम करना शुरू किया था। लेकिन, जैसे-जैसे आगे बढ़ते गए वैसे-वैसे तकनीक की नई बातें पता चलती गईं। इसमें अलग-अलग हिन्दी फोंट के साथ ही की-बोर्ड के बारे में

पता चला है। अलग-अलग की-बोर्ड अपने सुविधा और आसानी के लिए है लेकिन इसके साथ ही इनके कारण नुकसान भी काफी है।

फोंट के अलावा हिन्दी की-बोर्ड (कुंजी पटल) के क्षेत्र में काफी अराजकता है। हालांकि, सीडैक ने इनस्क्रिप्ट जैसा वैज्ञानिक, तेज और सरल की-बोर्ड 1986 में ही बना लिया था। लेकिन अभी तक हिन्दी में 100 से अधिक प्रकार के की-बोर्ड प्रचलित हैं, जिनमें सबसे ज्यादा काम रेमिंग्टन, फोनेटिक और इनस्क्रिप्ट पर किया जाता है। हालांकि, यूनिकोड ने फोंट की समस्या को तो हल कर दिया है, लेकिन लिखने के लिए प्रयुक्त की-बोर्ड में अभी भी कोई सर्वस्वीकृत मानक नहीं है। सी-डैक द्वारा विकसित इंसक्रिप्ट की-बोर्ड को सरकार ने मानक की-बोर्ड के रूप में माना, लेकिन इसमें भी हिन्दी के कई चिह्नों की कमी है। इसलिए इसमें अभी काफी सुधार की गुंजाइश है। इस बीच लोगों को रेमिंग्टन जैसी पुरानी, धीमी, अवैज्ञानिक और दुरूह टाइपिंग प्रणाली को सीखना पड़ रहा है।

वैश्विक स्तर पर किए गए कई शोधों में बताया गया है कि कम्प्यूटर पर आने वाले वक्त में अंग्रेजी भाषा से कहीं अधिक मंदारिन और हिन्दी भाषाएं छाई रहेंगी। लेकिन अभी वास्तविकता में हिन्दी न सिर्फ अंग्रेजी से, बल्कि दूसरी देसी भाषाओं से भी पिछड़ी नजर आ रही है। कम्प्यूटर पर आम प्रयोक्ता के लिए हिन्दी भाषा का इस्तेमाल पहली बार सुविधाजनक तब हुआ जब माइक्रोसॉफ्ट ने विन्डोज संस्करण में हिन्दी को शामिल किया। हालांकि विन्डोज एक्सपी संस्करण तक हिन्दी का प्रयोग शुरू करना और उसे सक्रिय करना काफी झंझटभरा काम था। लेकिन माइक्रोसॉफ्ट के नवीनतम संस्करण में अंतर्निहित रूप से हिन्दी को जगह देकर इसे सुविधाजनक बना दिया गया है।

भारत सरकार की संस्था सी-डैक ने भी हिन्दी के लिए कई फोंट व सॉफ्टवेयरों का विकास किया है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में पिछले कुछ दशकों से शीघ्र गति से विकास हुआ है। सूचना प्रौद्योगिकी मनुष्य को सोचने, विचारने और संप्रेषण करने के लिए तकनीकी सहायता उपलब्ध कराती है। सूचना प्रौद्योगिकी के अंतर्गत कम्प्यूटर के साथ-साथ माइक्रो इलेक्ट्रॉनिक्स और संचार प्रौद्योगिकियां भी शामिल हैं। सूचना प्रौद्योगिकी के विकास का अद्यतन रूप हमें इंटरनेट, मोबाइल, रेडियो, टेलीविजन, टेलीफोन, उपग्रह प्रसारण, कम्प्यूटर के रूप में दिखाई देता है। आज सूचना प्रौद्योगिकी ने विश्व को अपने आगोश में ले लिया है।

फोंट की जानकारी का अभाव

आजकल लोगों को फोंट विविधता के बारे में भी पूरी तरह से ज्ञान प्राप्त नहीं है। अलग-अलग फोंट होने और उनके उपलब्ध नहीं होने के कारण हम अपनी पसंदीदा या जानकारी वाली वेबसाइट या वेब पोर्टल को चाहकर भी देख नहीं पाते हैं। इस कारण कई बार समस्या आती है। वास्तव में जो लोग जिस फोंट को पसंद करते है, वो उसका उपयोग भी बहुतायत से करते है। हिन्दी फोंट का विकास भी बहुत हद तक इसी पसंद के आधार पर हुआ है। जिस फोंट को जितने ज्यादा लोग पसंद करते है, उसफोंट को उसी हिसाब से प्रोत्साहित किया जाता रहा है। इसी कारण कोई एक फोंट अब तक बहुतायत से प्रचलन में नहीं आया है। हालांकि यूनिकोड अब तेजी से अपना स्थान बनाता जा रहा है।

हिन्दी टाईपिंग की समस्या

आज भी की-बोर्ड अंग्रजी में ही उपलब्ध होते हैं। हिन्दी टाइपिंग करने के लिए अंग्रेजी की-बोर्ड पर हिन्दी की वर्णमाला चिपका दी जाती है। अब पहले तो वैसे ही आम कम्प्यूटर उपयोगकर्ता को यूनिकोड का पता होता नहीं। आज भी हिन्दी टाइपिंग के बारे में एक आम कम्प्यूटर उपयोगकर्ता को यही मालूम है कि इसके लिए पहले हिन्दी की टाइपिंग (रेमिंग्टन) सीखनी होती है। फोनेटिक तथा इनस्क्रिप्ट प्रणालियों के बारे में बहुत ही कम लोगों को पता है।

टाइपिंग के लिए आईएसएम नामक सॉफ्टवेयर सीडैक ने बनाया है, परंतु ये मुफ्त नहीं है इसलिए आम आदमी

के बस में इसे खरीदना नहीं है। इसका कोई ट्रायल वर्जन तक उपलब्ध नहीं है, जिससे कोई इसका परीक्षण कर इसे लेने के बारे में विचार कर सके। इसके अलावा ये केवल कुछ चुनिंदा सॉफ्टवेयरों पर ही काम करता है। इन वजहों से ये उपरोक्त समस्या का समाधान नहीं हो सकता।

फोनेटिक टाइपिंग वालों के लिए एक तरीका है नॉन-यूनिकोड टाइपिंग द्वारा। अयूनिकोडिट टाइपिंग के लिए बीआरएच और देवनागरी नामक नॉन-यूनिकोड फोंट होते है, परंतु इसमें केवल एक ही फोंट का प्रयोग किया जा सकता है। एक अन्य टूल है सीडैक का जीआईएसटी एंड टीटी टायपिंग टूल। इसमें तीनों लेआउट उपलब्ध हैं- फोनेटिक, इनस्क्रिप्ट तथा रेमिंग्टन। यह एक नॉन-यूनिकोड इनपुट मैथड एडिटर है। इसमें चार फोंट उपलब्ध हैं, लेकिन वो डीटीपी जैसे कामों के लिए उपयुक्त नहीं।

निष्कर्ष

हिन्दी कम्प्यूटिंग को तेजी से आगे बढ़ाने के लिए हमें हिन्दी की-बोर्ड को भी तेजी से लोकप्रिय करना होगा। न केवल हिन्दी की-बोर्ड बल्कि अंग्रेजी की तरह एक ही तरह का की-बोर्ड। इससे लोगों में इसके इस्तेमाल का तरीका आसान होगा और उनकी रूचि भी इसके लिए बढ़ेगी। निश्चित ही विन्डोज 10 से लेकर अन्य ऑपरेटिंग सिस्टम और डेस्क टॉप पब्लिशिंग में उपयोग में आने वाले सॉफ्टवेयर अगर इसकी पहल करते है तो हिन्दी की-बोर्ड को भी एक स्टैण्डर्ड फॉरमेट में देखा जा सकता है।

चित्र 1: देवनागरी रेमिंग्टन की-बोर्ड

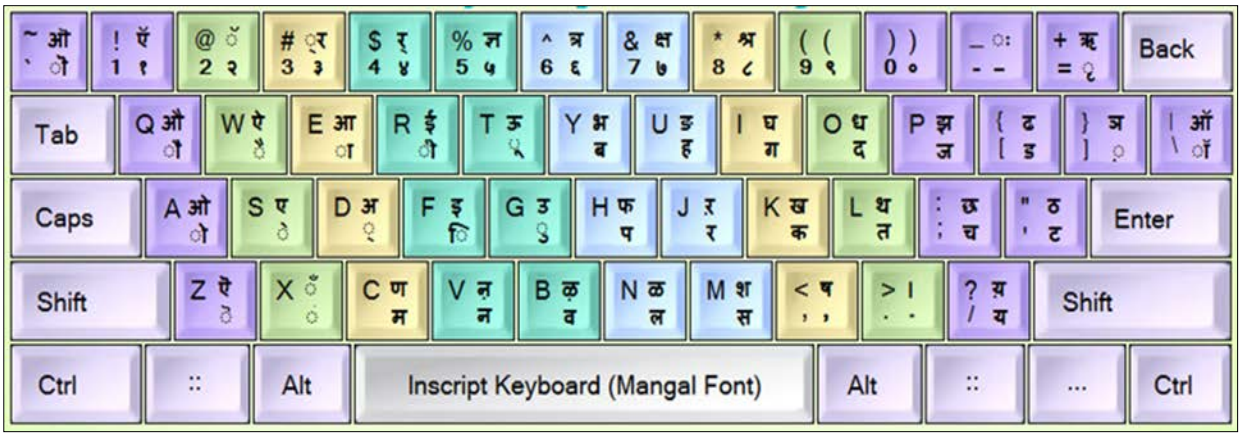

चित्र 2: इनस्क्रिप्टकी-बोर्ड

चित्र 3: फोनेटिक की-बोर्ड

संदर्भ सूची

1. Bureau of Indian Standards, Manak Bhavan, 9 Bahadur Shah Zafar Marg, New Delhi PIN 110002, India. Indian Script Code for Information Interchange - ISCII, 1991.
2. Robin Jeffery. “Indian Language Newspapers and why they Grow,” Journal of Information,1993:28:2004-2011.
3. https://navbharattimes.indiatimes.com
4. Various keyboard and Hindi,Wikipedia.com
5. https://navbharattimes.indiatimes.com/tech/tips-tricks/utility-of-12-function keys/articleshow/46073319.cms
6. https://www.studyfry.com/input-devices
7. https://www.google.com/search
8. पचैर सुधीश, नये जनसंचार माध्यम और हिन्दी राजकमल प्रकाशन प्रा.लि, नईदिल्ली
9. हिन्दी की-बोर्ड का प्रचलन, सीडैक
10. मध्यप्रदेश एजेंसी फॉर प्रमोशन फॉर इन्फर्मेशन एक्सचेंज